27

नए प्रबन्ध के अधीन

(6:15-23)

अमेरिका में कई बार हमें किसी कारोबार की जगह बड़े-बड़े शब्दों में "**नये प्रबन्ध के अधीन**" लिखा मिलता है। इस साइन बोर्ड से पता चलता है कि किसी कारोबार का मालिक बदल गया है, परन्तु इससे कुछ और भी पता चलता है। आमतौर पर यह सम्भावित ग्राहकों के लिए भी लगाया जाता है कि उन्हें पता चल जाए कि अब वे बेहतर उत्पाद तथा बेहतर सेवाओं सहित कारोबार से *और उम्मीद कर सकते हैं।* रोमियों 6:15-23 में पौलुस ने "**नये प्रबन्ध के अधीन**" वाला बोर्ड लगाया है। कालांतर में हमारे जीवन पाप और शैतान के "प्रबन्ध" से चलते थे, परन्तु हमें "दाम देकर मोल" लिया गया था (1 कुरिन्थियों 6:20) जिस कारण अब हम *ईश्वरीय* "प्रबन्ध" के अधीन हैं। परमेश्वर हमसे अधिक की उम्मीद करता है और संसार हमसे अधिक की उम्मीद कर सकता है क्योंकि अब हम "नये प्रबन्ध के अधीन" हैं।

"मसीह में नया जीवन कैसे जीएं" के लिए हमारा वचन पाठ इन शब्दों से समाप्त हुआ था: "... क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन अनुग्रह के अधीन हो" (रोमियों 6:14)। हमने सुझाव दिया था कि इसका अर्थ है कि हम "कानूनी प्रबन्ध" के अधीन नहीं, बल्कि "अनुग्रह के प्रबन्ध" के अधीन हैं। कानूनी प्रबन्ध वह है, जिसमें उद्धार व्यवस्था का *पूरी तरह से* पालन करने से आता है जबकि अनुग्रह का प्रबन्ध वह है, जिसमें उद्धार परमेश्वर की ओर से दान है।

इन शब्दों का इस्तेमाल करते हुए पौलुस ने भी एक आपत्ति का अनुमान लगाया था: "तो क्या हुआ? क्या हम इसलिए पाप करें, कि हम व्यवस्था के अधीन[1] नहीं वरन अनुग्रह के अधीन हैं?" (आयत 15क)। स्पष्टतया कुछ लोग इसी निष्कर्ष पर पहुंचे हैं उनका मानना है कि यदि हम व्यवस्था के अधीन नहीं हैं तो हमें किसी भी व्यवस्था को मानने की ज़िम्मेदारी से छूट है। उनका जीवन ऐसा है, जिसके द्वारा वे कहते हैं, "पापपूर्ण जीवन बिताने सहित हम जो चाहे करने के लिए स्वतन्त्र हैं।" इस सुझाव के लिए पौलुस का उज़र चौंकाने वाला था, "कदापि नहीं!" (आयत 15ख)। आयत 1 में उसने ऐसा ही एक प्रश्न पूछा था और ऐसे ही उसका उज़र दिया था (आयत 2क)।

कई लेखकों का विचार है कि 1 और 15 आयतों में पाप के बारे में दिए गए प्रश्न थोड़े से अलग हैं।[2] आयत 1 में पौलुस ने पूछा, "क्या हम पाप *करते रहें*... ?" जबकि आयत 15 में उसने पूछा, "क्या हम *पाप करें*... ?" ऐसा अन्तर किया जाना चाहिए या नहीं, पौलुस मसीही लोगों को बता देना चाहता था कि पाप और पाप करने को मसीही जीवन शैली से मिलाया नहीं जा सकता। एफ.एफ.ब्रूस ने कहा है, "पाप करने के बहाने के रूप में 'अनुग्रह के अधीन' होने जैसा व्यवहार करना इस बात का संकेत है कि व्यक्ति वास्तव में 'अनुग्रह के अधीन' बिल्कुल नहीं है।"[3]

रोमियों 6 और 7 में पौलुस ने कई कारण दिए कि मसीही होने के कारण हमें पाप क्यों नहीं करना चाहिए। 6:1-14 में दिया कारण यह है कि मसीह की मृत्यु में बपतिस्मा पाने से (आयत 3)

हम पाप के लिए मर गए (आयत 2)। जब हम पाप से मर गए तो हम पाप की दासता से छूट गए (आयतें 7, 9, 14)। इस पाठ के लिए वचन पाठ में (6:15-23) पौलुस ने दास के अपने रूपक को फिर से बनाकर उसे विस्तार दिया। उसका मूल तर्क यह था कि हमें पाप की सेवा नहीं करनी चाहिए ज़्योंकि अब हम *पाप* के दास नहीं रहे, बल्कि अब *परमेश्वर* के दास बन गए हैं। हम "नये प्रबन्ध के अधीन" हैं।

एक प्रमाणित निष्कर्ष (6:16)

पौलुस ने यह कहते हुए आरज़्भ किया, "ज़्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिए तुम अपने आप को दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो: और जिस की मानते हो,[4] चाहे पाप के, जिस का अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के ... ?" (आयत 16)। पहली सदी के लोगों को दासता का अच्छी तरह ज्ञान था। रोम और रोमी साम्राज्य की जनसंज़्या का अधिकतर भाग दासों का ही था। पौलुस के कई, शायद अधिकतर पाठक कानूनी और राजनैतिक रूप से स्वतन्त्र थे, परन्तु वह उन्हें बताना चाहता था कि आत्मिक रूप में हर व्यज़्ति किसी न किसी चीज़ का दास है। हर व्यज़्ति किसी की *आज्ञा मानता* है, चाहे यह उसकी अपनी ही, सनक या इच्छाएं हों। ऐसा करके वह उस वस्तु का दास बन जाता है।

पौलुस ने आगे कहा, "... और जिस की मानते हो, चाहे पाप के, जिस का अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिसका अन्त धार्मिकता है?" (आयत 16)। अन्ततः सेवा करने पर व्यज़्ति की निजी पसन्द के दो विकल्प निकलते हैं कि या तो वह अपनी लालसाओं के आगे हाथ डालकर पाप का दास हो जाता है या फिर परमेश्वर की आज्ञा मान सकता है (आयत 17) जिससे प्रभु उसका मालिक बन जाए।

कोई विरोध करके कह सकता है, "मैं *किसी का* गुलाम नहीं हूं! मैं *आज़ाद* हूं!" जब यहूदियों ने यह दावा किया था (यूहन्ना 8:33) तो यीशु ने उनसे कहा था, "जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है" (आयत 34)। बहुत से लोग जो अभिज़्तपूर्ण जीवन बिताते हैं इस बात को नहीं जानते कि वे कितने गुलाम हैं। मुझे एक कार्टून का ध्यान आता है, जिसमें चूहेदानी में पकड़े गए चूहे को दिखाया गया है। चूहा कह रहा था, "मेरे पास पिंजरा है!" जबकि पिंजरा कह रहा था, "नहीं मेरे पास चूहा है।" पिंजरे को "पाप" नाम दिया गया और चूहे का नाम "पापी" रखा गया था।

आप दास *तो होंगे,* परन्तु प्रश्न केवल यह है कि आप *किसके* दास होंगे। आयत 16 के अनुसार यदि आप पाप के दास हैं तो आपको "मृत्यु" अर्थात आत्मिक मृत्यु का श्राप मिलेगा। परन्तु यदि आप परमेश्वर की सेवा करते हैं तो आपको "धार्मिकता" अर्थात प्रभु के साथ सीधे होने की आशीष मिलेगी।

पाप या परमेश्वर, दोनों में से हम केवल एक की सेवा कर सकते हैं; दोनों की नहीं। यीशु ने कहा, "कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता" (मज़ी 6:24क)। आज कई लोग एक से अधिक काम करते हैं, जिस कारण वे कई "स्वामियों" (नियोज़्ताओं) की सेवा करते हैं, परन्तु दास के पास ऐसा विकल्प नहीं होता था। दास के पास जो कुछ भी था, चाहे उसका समय ही हो सब उसके मालिक का होता था। "तुम पाप के दास नहीं हो सकते जो मृत्यु की ओर ले जाता है

और उसके साथ ही आज्ञाकारिता के दास जो धार्मिकता की ओर ले जाता है'' (रोमियों 6:16; JB)।

पिछली वचनबद्धता (6:17, 18)

पौलुस आयत 16 के सामान्य नियम से अपने पाठकों की विशेष परिस्थिति की ओर चला गया। उसने उनकी पिछली वचनबद्धता की बात की:

> परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौ भी मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए (आयतें 17, 18)।

कालांतर में वे ''पाप के दास'' रहे थे, परन्तु उन्हें अपनी निष्ठा बदलने और प्रभु की आज्ञा मानने के लिए चुना गया था। ''मानने वाले'' एक मिश्रित शब्द *hupakoe* से लिया गया है, जिसका मूल अर्थ ''के अधीन'' (*hupo*) ''सुनना'' (*akouo*) है।[5] यह सुनी गई बात का सकारात्मक *उत्तर* देने के लिए है (देखें याकूब 1:22)। बाइबल में यह शब्द लगभग ''*धार्मिक* निर्णय का संकेत देता है।''[6]

''केवल विश्वास से उद्धार'' की शिक्षा देने वाले लोग 16 और 17 आयतों में आज्ञाकारिता पर पौलुस के ज़ोर देने से परेशान होते हैं, विशेषकर इसलिए क्योंकि आज्ञापालन पाप से छूटने से पहले बताया गया है (आयतें 17, 18)। परन्तु पौलुस के शब्द सब लोगों में ''विश्वास करके उसकी मानें'' के उसके लक्ष्य से मेल खाते हैं (1:5; देखें 16:26)। डग्लस जे. मू ने लिखा है, ''स्पष्टतया पौलुस आज्ञापालन के महत्व पर ज़ोर देना चाहता है।''[7]

''उस उपदेश का सांचा''

पौलुस के पाठक ''मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिस के *सांचे* में [वे] ढाले गए थे'' (आयत 17ख)। ''सांचे'' यूनानी भाषा के शब्द *tupos* से लिया गया है, जिससे अंग्रेज़ी भाषा का शब्द ''type'' बना है।[8] *Tupos* का अर्थ ''सांचा, आकृति, [या] नमूना'' हो सकता है। रोमियों 6:17 में इसका अर्थ ''*शिक्षा का नमूना*'' है।[9] यह इस बात का संकेत है कि 50 ईस्वी से पहले प्रभु की कलीसियाओं में शिक्षा का एक ही मेल खाता नमूना था।

लेखक अनुमान लगाते हैं कि पौलुस के मन में ''शिक्षा का नमूना'' कौन सा हो सकता है, परन्तु किसी और जगह पौलुस संदेश के सार के बारे में स्पष्ट था कि उसने और परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए सुसमाचार प्रचारकों ने क्या सुनाया है। उसने कुरिन्थसु के मसीही लोगों को बताया, ''क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था, कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, वरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं'' (1 कुरिन्थियों 2:2)। फिर उसने उनसे कहा, ''इसी कारण मैंने सब से पहले तुम्हें वही बात पहुंचा दी,[10] जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया। और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा'' (1 कुरिन्थियों 15:3, 4)। मैं टीकाकारों के साथ सहमत हूं, जिन्होंने लिखा है, ''रोमी विश्वासियों को दिया गया *शिक्षा का नमूना* ... यह शुभ समाचार था कि यीशु उनके पापों के लिए

मारा गया और उन्हें नया जीवन देने के लिए जी उठा था।''[11]

यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने का विषय रोमियों 6 के आरम्भिक भाग में बपतिस्मे पर पौलुस की शिक्षा का केन्द्र बिन्दु था। आयत 4 से आगे निकल जाने के बाद, कई टीकाकार बपतिस्मे के विषय को नज़रअंदाज़ करना चुनते हैं; परन्तु जैसा कि विलियम बार्कले ने ध्यान दिलाया है, विचाराधीन आयत ''बपतिस्मे की चर्चा से'' ही सामने आई।[12] पौलुस के पाठकों को ''शुभ समाचार'' के ''सांचे'' या नमूने की बात मानने पर बपतिस्मा दिया गया था। उन्हें मसीह की *मृत्यु, गाड़े जाने* और *जी उठने में* नये जीवन की चाल चलने के लिए उसके साथ बपतिस्मे के पानी में गाड़ा गया था। जेज़स मैज़नाइट ने *tupos* का अनुवाद ''सांचा'' के रूप में किया है, ''जिसमें रोमी लोगों को उनके बपतिस्मे के समय डाला गया था,'' ताकि वे ''नया आकार'' ले सकें।[13]

''मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए'' (आयत 17) वाक्यांश पर भी कुछ कहना आवश्यक है। यूनानी शब्द (*paradidomi* से) के अनुवाद ''मानने वाले हो गया'' का अर्थ मूल में ''दे दिया'' है।[14] कुछ अनुवादक इस वाक्यांश की व्याख्या, ''जो शिक्षा तुम्हें दी गई थी'' (देखें KJV) के रूप में करते हैं और सम्भवतया इसे समझने का सबसे आसान ढंग यही है, परन्तु ''मानने वाले/दी गई'' कर्मवाच्य में है, जिस कारण अधिकतर लोग इस वाक्यांश का इस्तेमाल यह संकेत देने के लिए करते हैं कि मसीही लोगों को ''वचन के सुपुर्द किया गया'' था। जेज़स एडवर्ड्स ने कहा है, ''मुख्य बात यह है कि *उपदेश का सांचा* हमारा नहीं है, बल्कि हम इसके हैं।''[15] NEB का अनुवाद ''जिस शिक्षा के तुम अधीन किए गए'' है।

पौलुस के पाठकों को ''मन से उपदेश को मानने'' (आयत 17) पर ''पाप से छुड़ाया'' (आयत 18) गया था, न कि इससे पहले। KJV के तथा फिलिप्स के अनुवादकों ने इस पर ज़ोर देने के लिए ''then'' शब्द जोड़ दिया। KJV में ''*तो फिर* पाप से छुड़ाए जाकर ...'' (आयत 18) है। वचनपाठ में घटनाओं की शृंखला इस प्रकार है:

- ''पाप के दास'' (आयत 17क)।
- ''मन से उपदेश के मानने वाले'' (आयत 17ख)।
- ''पाप से छुड़ाए गए'' (आयत 18क)।
- ''धर्म के दास'' (आयत 18ख)।

इसमें और बपतिस्मे पर कही पौलुस की बात में सम्बन्ध है। उसने ज़ोर दिया कि हमें ''नए जीवन की सी चाल'' (आयत 4) चलने के लिए बपतिस्मे के पानी में से ''जिलाया गया'' है, ताकि हम ''[मसीह] के जी उठने की समानता में जुट जाएं'' (आयत 5) और यह कि ''पाप का हमारा शरीर व्यर्थ हो जाए'' (आयत 6)। फिर उसने (आयत 18) वाली शब्दावली का ही इस्तेमाल किया: वहां हम ''पाप से छुड़ाए'' जाते हैं (आयत 7)।

क्या इसका अर्थ यह है कि हमें उद्धार पाने के लिए केवल किसी रीति को पूरा करने के लिए केवल किसी परम्परा का पालन करना आवश्यक है? ''शायद ऐसा कभी नहीं होगा!'' पौलुस द्वारा बताई गई आशिषें रोम में रहने वाले मसीही लोगों को इसलिए मिली थीं क्योंकि उन्होंने ''*मन से* [*kardia*] उपदेश को मान लिया'' था (आयत 17)। ''क्योंकि मसीह यीशु में न खतना, न

खतना रहित कुछ काम का है, परन्तु केवल, जो प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है'' (गलातियों 5:6)।

बाइबल सिखाती है कि ''यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है'' (1 शमुएल 16:7; देखें 16:1-13)। पूरी बाइबल में *मन से* परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के महत्व पर ज़ोर दिया गया है (देखें व्यवस्थाविवरण 10:12; 1 शमुएल 12:20; इफिसियों 6:6)। परमेश्वर हमसे *सिद्ध* आज्ञापालन की मांग नहीं करता (कोई भी इसके योग्य नहीं है), परन्तु वह ''निष्कपटता से'' अर्थात ''सच्चे मन से'' आज्ञा मानने के लिए कहता है (रोमियों 6:17; NEB; JB)।

जब पापी लोग मन से आज्ञा मानते हैं तो वे ''पाप से छुड़ाए'' जाते हैं (आयत 18क)। पाप के बन्धन तोड़ डाले गए थे और उन्हें *स्वतन्त्र* कर दिया गया था। ज़्या इसका अर्थ यह है कि उन्हें जिज़्मेदारी से स्वतन्त्र कर दिया गया था कि वे परमेश्वर या मनुष्य की परवाह किए बिना जो मन में आए वे करें? नहीं! पौलुस ने कहा ''और *तुम* पाप [गलत जीवन] से छुड़ाए जाकर *धर्म* [सही जीवन] के दास हो गए'' (आयत 18)।

याद रखें कि पौलुस ने कहा था, ''... जिस की आज्ञा मानने के लिए तुम अपने आप को दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो'' (आयत 16)। उन्होंने ''मन से'' परमेश्वर की आज्ञा मानी थी, इस कारण अब वे *परमेश्वर* के दास थे। यही वचनबद्धता बपतिस्मा लेने के समय उन्होंने की थी।

वर्तमान पसन्द (6:19, 20)

हमारे वचन पाठ में यहां पर पौलुस यह समझाने के लिए कि वह मसीहियत की तुलना दासता से ज़्यों कर रहा था, यहां रुक गया। वह इस बात को जानता था कि दासता किसी को अच्छी नहीं लगती और हर प्रकार की परेशानी लाती है। इस कारण उसने जल्दी से कहा, ''मैं तुज़्हारी शारीरिक दुर्बलता के कारण मनुष्यों की रीति पर कहता हूं'' (आयत 19क)। अन्य शज़्दों में, ''मैं एक उदाहरण दे रहा हूं, जिससे तुम अच्छी तरह परिचित हो, ज़्योंकि हो सकता है कि बिना इसके तुज़्हें मेरी शिक्षा समझ में न आए।''

पौलुस ने मसीही जीवन की तुलना दासता से ज़्यों *की*? मसीहियत और दासता में एक बहुत बड़ी खाई थी, ज़्योंकि परमेश्वर का दास होना स्वैच्छिक था, न कि जबर्दस्ती से; और परमेश्वर निर्दयी स्वामी *नहीं* था। जैसा कि पहले ध्यान दिलाया गया है पौलुस ने दासता के रूपक का इस्तेमाल इसकी प्रसिद्धि के कारण किया, परन्तु हाफर्ड लकॉक ने एक अतिरिज़्त कारण सुझाया है। उसने लिखा, '''दास' एक मज़बूत शज़्द है। परन्तु परमेश्वर के लिए दासता एक बड़ी बात है। एक निष्ठा को दिखाने के लिए जिसकी मांग मसीह करता है इससे कम शज़्द नहीं हो सकता था।''[16]

''मन से'' परमेश्वर की बात मानकर पौलुस के पाठकों ने वास्तव में दिल से प्रभु के प्रति निष्ठा दिखाई थी। अब पौलुस ने उन्हें उस वचनबद्धता *के अनुरूप जीने* के लिए प्रोत्साहित किया जो उन्होंने की थी: ''... जैसे तुम ने अपने अंगों को कुकर्म के लिए अशुद्धता और कुकर्म के दास करके सौंपा था, वैसे ही अब अपने अंगों को पवित्रता के लिए धर्म के दास करके सौंप दो'' (आयत 19)। कालांतर में पाप के दास होने के रूप में उन्होंने अपनी देहें और अपना सब कुछ ''अशुद्धता [*akatharsia*] और कुकर्म [*anomia*] के दास करके सौंपा था'' (आयत 19ख)। उनका समर्पण गज़्भीर था, परन्तु कभी संतोषजनक नहीं रहा, ज़्योंकि वे पाप में डूबते चले गए

(आयत 19ग)। अब पौलुस ने कहा कि जो लोग परमेश्वर के दास बन चुके हैं उन्हें परमेश्वर के प्रति वैसी ही सच्ची लगन होनी आवश्यक है: "वैसे ही अब अपने अंगों को पवित्रता के लिए धर्म के दास करके सौंप दो" (आयत 19घ)।

जब मैं पौलुस की ताड़ना को पढ़ता हूं तो मुझे "प्रसिद्धि, पैसा या शक्ति पाने की कुछ लोगों की लगन" का ध्यान आता है।[17] फिर मैं उसकी आमतौर पर लोगों के मसीहियत को समझने के आधे-अधूरे ढंग से तुलना करता हूं। स्पष्टतया कइयों को लगता है कि "उन्हें पाप करने की पक्की जिम्मेदारी मिली है, और धर्म की वैकल्पिक जिम्मेदारी है," परन्तु "इसके बिल्कुल उलट वाली बात सच है!"[18] एक आदमी ने पौलुस की चुनौती के सार को पकड़ा। अपना जीवन प्रभु को देने के बाद उसने कहा, "मैं उतना ही अच्छा संत बनना चाहता हूं, जितना अच्छा पापी था!"[19]

जब लोग अपने जीवन पाप के लिए देते हैं तो इसका परिणाम "और कुकर्म" होता है (आयत 19ग)। जब लोग अपने आप को धर्म के लिए देते हैं तो इसका परिणाम "पवित्रता के लिए [*hagiasmos*]" होता है (आयत 19ङ)। "पवित्रता" शब्द का अर्थ परमेश्वर द्वारा "अलग करना" अर्थात पवित्र जीवन जीने या उसके लिए समर्पित जीवन जीने के लिए अलग करना भी हो सकता है।

हमारी चुनौती अपने आप को ऐसे लोगों के रूप में *व्यवहार करना* है जिन्हें परमेश्वर द्वारा "अलग किया गया" है। पौलुस ने कुरिन्थुस के लोगों को बताया "आओ, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें" (2 कुरिन्थियों 7:1)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा, "सबसे मेल मिलाप रखने, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा" (इब्रानियों 12:14)। किसी ने इसे इस प्रकार लिखा है, "मसीही चुनौती है वह *बनने* की, जो हम *हैं*" (यानी *पवित्र किए हुए*)।

फिर पौलुस ने लिखा, "जब तुम पाप के दास थे, तो धर्म की ओर स्वतन्त्र थे" (रोमियों 6:20)। जब तक हम पाप के गुलाम हैं, तब तक धार्मिकता की सेवा करने अर्थात जो सही है वह करने की हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं। इसके उलट भी सही है: एक बार परमेश्वर के दास बन जाने पर हम पाप से छूट जाते हैं, अब इसके आदेश मानने को हम बाध्य नहीं हैं।

19 और 20 आयतों में पौलुस ने प्रभु को अपने जीवन देने *जारी रखने* के लिए मसीही लोगों को प्रोत्साहित किया। कइयों को लग सकता है कि एक समय उन्होंने प्रभु की बात मानने का निर्णय लिया था और उन्हें पाप से छुड़ाया गया था इसलिए अब उन्हें पाप के बारे में निर्णय लेने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु हर दिन निर्णय लेने का दिन होता है। हम हर रोज़ चौराहे पर खड़े होकर तंग मार्ग "जो जीवन को पहुंचाता है" या चौड़े मार्ग की ओर "जो विनाश को पहुंचाता है" चुनना जारी रखते हैं (मत्ती 7:13, 14)।

पक्के परिणाम (6:21-23)

चौराहे पर खड़े होकर सही पसन्द चुनने के लिए हमें कौन सी बात प्रेरित करेगी? पौलुस ने अपने पाठकों (और हमें) नीचे सब मार्गों के अन्तिम छोर को देखने की चुनौती दी। उसने पहले पूछा, "सो जिन बातों से अब तुम लज्जित होते हो, उनके उस समय तुम ज़्या फल पाते थे?"

(आयत 21क)। यूनानी शब्द (*karpos*) का अनुवाद यहां "फल" किया गया है (देखें KJV)। NIV में "तुमने ज़्या लाभ काटा ... ?" है।

"जिन बातों से अब तुम लज्जित होते हो" वाक्यांश पर ध्यान दें। अफसोस की बात है कि कुछ कम-समर्पित मसीही लोग अपने पिछले जीवनों को बड़ा याद करते हैं। वे उन इस्राएलियों की तरह हैं, जो मिस्र की दासता की बात भूलकर पुरानी बातों को याद करते हैं (देखें गिनती 11:5)। उनकी तुलना झोंपड़-पट्टी से निकाले गए किसी अनाथ से की जा सकती है, जो केक के टुकड़ों को याद करता है, परन्तु यह भूल जाता है कि वह उन्हें कूड़े के ढेर से उठाया करता था। जिन्हें पौलुस ने सम्बोधित किया उनमें विशेष बात यह थी कि वे अपने पहले पापपूर्ण जीवन पर लज्जित होते थे।

पौलुस ने उन्हें गम्भीरतापूर्वक विचार करने के लिए कहा कि उन्होंने अपने लज्जापूर्ण जीवनों से ज़्या पाया था। पाप से मिलने वाले कुछ "लाभ" इस प्रकार हैं: दोषपूर्ण विवेक, अपने प्रियजनों से अलगाव, उन आशिषों का आनन्द लेने के अयोग्य होना जो परमेश्वर हमें देना चाहता है। बेशक इसका सबसे खतरनाक परिणाम आत्मिक मृत्यु है। पौलुस ने कहा, "ज़्यों उन [जिन से उन्हें शर्म आती थी] का अन्त तो मृत्यु है" (रोमियों 6:22क)। "मृत्यु" का अर्थ शारीरिक मृत्यु नहीं है जो सब पर आती है (इब्रानियों 9:27) और कई बार निष्पाप बच्चों पर भी आ जाती है, बल्कि इसका अर्थ आत्मिक मृत्यु अर्थात परमेश्वर से जुदाई है (यशायाह 59:1, 2)। इस संदर्भ में इसे "अनन्त जीवन" (रोमियों 6:22) से अलग किया गया है, इसलिए पौलुस के मन में स्पष्टतया "अनन्त मृत्यु" होगी। यानी अनन्तकाल के लिए परमेश्वर की उपस्थिति से दूर होना (2 थिस्सलुनीकियों 1:8)। पाप मित्र होने की प्रतिज्ञा तो करता है, परन्तु वास्तव में यह एक शत्रु है; यह स्वतन्त्रता दिलाने की प्रतिज्ञा तो करता है, परन्तु लाता दासता है; यह प्रसन्नता देने की प्रतिज्ञा तो करता है परन्तु यह क्लेश और शर्म लेकर आता है; यह प्रतिज्ञा तो जीवन देने की करता है, परन्तु अन्त में मृत्यु दिलाता है।[20]

पाप के मार्ग के अन्त में मृत्यु है (देखें मत्ती 7:13)। दूसरे मार्ग पर ज़्या है? पौलुस ने आगे कहा, "परन्तु अब पाप से स्वतन्त्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है" (रोमियों 6:22)। मसीही व्यक्ति धार्मिकता के मार्ग पर चलते हुए, पवित्र किया (अलग किया) हुआ जीवन बिता रहा होता है। इस प्रकार इसका एक परिणाम "पवित्र किया जाना" है। इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि चलते हुए वह मार्ग अन्त में जीवन तक ले जाएगा (देखें मत्ती 7:14): "और ... तुम को फल ... अनन्त जीवन" (रोमियों 6:22ख) मिला!

पाप या परमेश्वर की सेवा करने के परिणामों को संक्षिप्त कैसे किया जा सकता है। रोमियों की पुस्तक में सबसे प्रसिद्ध आयतों में से एक, आयत 23 पौलुस की बात का सार है, "क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।"

कइयों को लगता है कि पाप की मज़दूरी में सुख, प्रसिद्धि और सफलता मिलती है; परन्तु पौलुस ने कहा ऐसा कुछ नहीं है। "पाप की मजदूरी तो मृत्यु" (आयत 23क) यानी आत्मिक मृत्यु है। अनुवादित शब्द "मज़दूरी" (*opsonion* से) दी गई सेवा की कीमत का संकेत देता है। लेखक सुझाव देते हैं कि पौलुस ने फिर "सैनिक रूपक" का इस्तेमाल किया।[21] बार्कले ने लिखा है, "*ओपसोनिया* सिपाही के वेतन को कहा जाता था, जिसे उसने अपने तन के जोखिम और माथे

के पसीने से कमाया था, जो उसका हक बनता था और जिसे उससे लिया नहीं जा सकता था।''[22] पापपूर्ण जीवन बिताने वाले का *हक* ज़्या बनता है? उसने ज़्या *कमाया* है? मृत्यु!

इसके विपरीत पौलुस ने कहा कि ''परमेश्वर का वरदान [*charisma*] हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''[23] (आयत 23ख)। पाप की मज़दूरी मिलती है, परन्तु परमेश्वर दान देता है। ''वरदान'' शब्द को रेखांकित कर लें। पौलुस ने इस अध्याय में आज्ञापालन के महत्व पर जोर दिया (देखें आयतें 16, 17)। हमारा आज्ञापालन हमारे विश्वास को दिखाना है (1:5; 16:26)। ज़्या इसका अर्थ यह है कि विश्वास करके और आज्ञा मानकर हम अपने उद्धार को *कमाते* या *उसके योग्य हो जाते हैं?* बिल्कुल नहीं। उद्धार *वरदान* अर्थात परमेश्वर के अनुग्रह का दान रहेगा और रहना चाहिए। विश्वास और आज्ञापालन तो केवल परमेश्वर के अद्भुत दान को ग्रहण करने का उसका ठहराया ढंग है।

''मृत्यु'' बनाम ''अनन्त जीवन'' दो परिणामों पर विचार करें। आपको इनमें से एक दिन कौन सा मिलेगा? आप इनमें से कौन सा पाना *चाहते* हैं? कहते हैं कि जिसकी भी आप सेवा करना चाहें उसे चुनने की आपको छूट है, परन्तु उस पसन्द को चुनने के बाद आपको अपनी पसन्द के परिणाम चुनने की छूट नहीं है। यदि आप मृत्यु *नहीं* चाहते हैं, यदि आप अनन्त जीवन *चाहते* हैं तो *आज ही* अपना जीवन पाप के बजाय प्रभु को दे दें!

सारांश

कई लोग पाप के गुलाम हैं पर उन्हें इसका पता नहीं है; और हैं जो परमेश्वर के गुलाम हैं, परन्तु वे उस प्रकार काम नहीं करते। जो लोग पाप के गुलाम हैं परन्तु उन्हें इसका पता नहीं है, वे लोग हैं जिन्होंने अपने जीवन कभी प्रभु को नहीं दिए। यदि आप उनमें से एक हैं तो मेरी प्रार्थना है कि पाप को त्यागकर परमेश्वर के अनुग्रह को स्वीकार कर लें ताकि वह आपको पाप से छुड़ा सके (रोमियों 6:3, 4, 17, 18)।

हमारे वचन पाठ में पौलुस की मुज़्य चिन्ता उन लोगों के लिए थी, जो परमेश्वर के गुलाम हैं परन्तु वैसे काम नहीं करते। यदि आप मसीही हैं तो बिल्कुल न भूलें कि आप ''नये प्रबन्ध के अधीन'' हैं। ज़्योंकि आप नये प्रबन्ध के अधीन हैं इसलिए मेरी प्रार्थना है कि आप इसके अनुकूल काम करें!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस प्रवचन का इस्तेमान करने पर आधे-अधूरे मन वाले मसीही लोगों को मन फिराकर प्रभु की ओर लौट आने के लिए प्रोत्साहित करें (प्रकाशितवाज़्य 3:15, 16, 19, 20)। आराधना सेवा में इस गीत को शामिल किया जा सकता है ''मेरे जीवन को ले और अपना कर ले।''

चार्ल्स स्विन्डल ने इस भाग को ''आप किसके दास हैं?'' नाम दिया।[24] रिचर्ड रोजर्स ने विषय के रूप में हमारे वचन पाठ के ''नये'' शब्द का इस्तेमाल करते हुए नये दायित्व (आयतें 14-18), नई जिज़्मेदारियां (आयतें 19, 20), नये प्रतिफल (आयतें 21-23) पर अपने विचार तैयार किए (देखें 6:4)।[25]

"पवित्र किया जाना" पर चर्चा करते समय आप एक उदाहरण का इस्तेमाल करें, जो आपके लोगों पर लागू होता हो। विशेष उद्देश्य के लिए किसी चीज़ के "अलग किए जाने" पर विचार करें। अमेरिका के बच्चों के साथ "सेंट" शब्द पर बात करते हुए डेल हार्टमैन दांत साफ करने वाले ब्रश का उदाहरण देते हैं। उन्हें इस बात की समझ आ सकती है कि जिसे दांत साफ करने के लिए अलग किया गया है, उसका इस्तेमाल चित्र बनाने जैसे किसी गलत उद्देश्य के लिए कभी नहीं किया जाना चाहिए।

टिप्पणियां

[1]अंग्रेज़ी बाइबलों के कई अनुवादों में व्यवस्था के लिए "Law" (बड़े "L" के साथ) (AB; CEV; फिलिपस) या "the law" (मेकोर्ड; NLT) है जो इस बात का संकेत है कि "law" यहां मूसा की व्यवस्था को कहा गया है। कोई संदेह नहीं कि इस चर्चा में पौलुस के मन में मूसा की व्यवस्था सबसे अव्वल थी (देखें 7:7); परन्तु व्यवस्था के लिए यूनानी शब्द से पहले कोई निश्चित उपपद नहीं है, जिस कारण इसकी प्रासंगिकता केवल मूसा की व्यवस्था से बढ़कर है। [2]जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1973), 238; रिचर्ड रोजर्स, *पेड इन फुल: ए कमैंट्री ऑन रोमन्स* (लब्बॉक, टैक्सस: सनसैट इंस्टीट्यूट प्रैस, 2002), 92; जिम मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक टैक्सस: मोन्टैक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 202. [3]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 134. [4]"दास" शब्द के नकारात्मक संकेत होने के कारण, कई अनुवादों में सेवक (देखें KJV) है; परन्तु यूनानी धर्मशास्त्र में *doulos* का बहुवचन रूप है जिसका अर्थ है "गुलाम।" [5]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 438. [6]ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ द न्यू टैस्टामेंट,* सम्पा., गरहर्ड किट्टल एण्ड गरहर्ड फ्रेडरिक, अनु. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 35 में गरहर्ड किट्टल, *"hypakoe."* [7]डग्लस, जे.मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 210. [8]*रोमियों, भाग 2* पुस्तक में आए पाठ "दो 'आदम' [5:12–21]" में "रूप" और "प्रतिरूप" पर चर्चा देखें। [9]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर,* द्वितीय संस्क., संशो. विलियम एफ. अर्डंट एण्ड विल्बर गिंगरिक (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957), 837. [10]यह ध्यान देने वाली बात है कि 1 कुरिन्थियों 15:3 में "पहुंची" शब्द उसी यूनानी शब्द से लिया गया है जिसका अनुवाद रोमियों 6:17 में "हो गए" हुआ है।

[11]ब्रूस बार्टन, डेविड वीरमन एण्ड नील विल्सन, *रोमन्स,* लाइफ एप्लीकेशन बाइबल कमैंट्री (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1992), 125. [12]विलियम बार्कले, *दि लैटर टू दि रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 89. [13]जेम्स मैकनाइट, *ए न्यू लिटरल ट्रांसलेशन फ्रॉम द ओरिजनल ग्रीक ऑफ़ ऑल द अपोस्टलिकल एपिस्टल्स विद ए कमैंट्री एण्ड नोट्स* (पृष्ठ नहीं: तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1984), 87. [14]वाइन, 156. [15]जेम्स आर. एडवर्ड्स, *रोमन्स,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1992), 173. [16]हाफोर्ड ई. लब्बॉक, *प्रीचिंग वेल्यूस इन द एपिस्टल्स ऑफ पॉल,* अंक 1, *रोमन्स एण्ड फर्स्ट कोरन्थियंस* (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1959), 43. [17]मू, 211. [18]डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को, *मास्टरिंग द न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* दि कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 140. [19]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 1 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 533 में उद्धृत। [20]मैक्गुइगन, 204 से लिया गया।

[21]एडवर्ड्स, 175. रोमियों 6 में पिछले सैनिक रूपक के बारे में *रोमियों, भाग 2* पुस्तक में "मसीह में नया जीवन कैसे जीएं (6:5–14)" पाठ में आयत 13 पर टिप्पणियां देखें। [22]बार्कले, 91. [23]एक बार फिर पौलुस ने कहा

कि परमेश्वर की आशीष मसीह *में* है। हम "मसीह में" कैसे आते हैं (6:3) पर ध्यान देते हुए अब इस सच्चाई पर ज़ोर देना चाहिए। [24]चार्ल्स आर. स्विन्डल, *लर्निंग टू वाक बाय ग्रेस: ए स्टडी ऑफ रोमन्स 6-11* (फुलर्टन, कैलिफोर्निया: इनसाइट फ़ॉर लिविंग, 1985), 6. [25]रोजर्स, 93 से लिया गया।

रोमियों की एक रूपरेखा

परिचय (1:1-17)

I. शिक्षा सज़्बन्धी (1:18-8:39)

क. फटकार (1:18-3:20)

1. अन्यजाति
2. यहूदी

ख. धर्मी ठहराया जाना (3:21-5:21)

ग. पवित्र किया जाना (6:1-7:25)

घ. महिमा देना (8:1-39)

II. व्यावहारिक (9:1-15:13)

क. व्याज़्या (9:1-11:36)

1. विश्वास से धर्मी ठहराए जाने को इस्राएलियों को दी हुई प्रतिज्ञाओं से मिलाया गया
2. विश्वास से धर्मी ठहराया जाना परमेश्वर के विश्वासयोग्य होने से मिलाया गया

ख. प्रासंगिकता (12:1-15:13)

सारांश (15:14-16:27)